कथा तुलसी की

स्नेह*

वर्तमान जीवन आपाधापी से और उथल-पुथल से भरा हुआ है। लोगों में गुस्सा और तनाव भी बहुत है। खुश और संतुष्ट रहना जैसे हम भूलते जा रहे हैं। यह जीवन शैली हमें उत्साह से भी भरती है तो दूसरी ओर निराश भी करती है। हमारे पास धन सम्पत्ति है, हर तरह की सुख- सुविधाएँ भी हैं, लेकिन और अधिक पाने की चाह और निरंतर आगे बढ़ने की होड़ हमें अशांत बनाए रखती है। प्रकृति हमें निरंतर देती रहती है, लेकिन हम प्राकृतिक स्रोतों का दोहन करने से पीछे नहीं हटते। प्राकृतिक आपदाएँ हमें चेतावनी भी देती हैं, लेकिन फिर उसे अनदेखा कर दिया जाता है। अनंत आकाश की तरह मनुष्य की इच्छाएँ भी अनंत हैं। परोपकार, प्रेम, सहयोग, दया, करुणा जैसे मानवीय मूल्य मानो कहीं खो से गये हैं। आज समाज को इन मूल्यों की अधिक आवश्यकता है, जिससे मानवता जीवित रहे। तुलसी के पौधे की तरह परोपकारी जीवन हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

एक पौधा जैसे ही अपने पेड़ बनने का सफर शुरू करता है वैसे ही वह अपने आप को दूसरों के लिए उपस्थित कर देता है। वह सुंदर फूलों को जन्म देता है। वह फलों को भी खुद के लिए नहीं रखता। अपनी पत्तियों को इतना घना कर देता है कि पंछी उस पर अपने घोंसलें बना लेते हैं और जलती दोपहरी में पथिक उसकी छाया में बैठ सकता है। अपनी जड़ों से लेकर अपनी टहनियों तक में वृक्ष एक ऐसा प्रेमी बनकर उभरता है जो सभी के लिए समान रूप से प्रेम में रमता है। फलों, फूलों और पत्तियों से श्रृंगार करने वाला पेड़ हमेशा एक विनम्रता को धारण किए रहता है। परमहंस योगानंद अपनी आत्मकथा, 'योगी कथा अमृत' में अपने गुरु की वाणी के संदर्भ में कहते हैं कि मनुष्य किसी वृक्ष से अलग नहीं बल्कि हम एक उल्टे वृक्ष के समान ही हैं। हमारा सिर बालों सहित वृक्ष की जड़ों के समान है और भुजाएं, शाखाओं की तरह हैं। मनुष्य की समानता किसी वृक्ष से मिलती अवश्य है पर मनुष्य गुणों में वृक्ष के समान बन ही नहीं पाता। पर मेरी स्मृति में एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें मैंने ऐसे गुण पाए थे।

Illastration by Charu Mahajan

मैं जिन तुलसी की चर्चा यहाँ कर रही हूँ वो एक बहुत ही साधारण और सज्जन पुरुष थे। मेरी स्मृतियों में उनकी एक तस्वीर शेष है। उनका सामान्य कद-काठी वाला शरीर था। गले में तुलसी माला और खादी का धोती-कुर्ता पहनते थे। कंधे पर खादी के वस्त्रों को बेचने के लिए गठरी लिए फिरते थे। वे गांधीवादी विचार के व्यक्ति थे और उनका नाम तुलसी था- यथा नाम तथा गुण!

मेरा बचपन दिल्ली के देहात के एक गाँव में बीता। दस-बारह वर्ष की थी तभी से मुझे उनका आना याद है। आते तो बहुत पहले से थे, पर मुझे तभी से याद है। तुलसी जी के गाँव का नाम अब भूल गई हूँ, पर ये याद है कि वे आसपास के गाँव से ही आते थे। नजदीक के गाँव में खद्दर (खादी) बेचकर वे अपनी आजीविका चलाते थे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विदेशी वस्तुओं एवं वस्त्रों का बहिष्कार और स्वदेशी अपनाने पर बल दिया गया था। गांधी जी के प्रभाव में चरखा घर-घर की शान बन गया और खादी के वस्त्रों की माँग बढ़ने लगी थी। आजादी के आंदोलन के समय गांधी जी ने खादी अपनाने का आह्वान

* सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग, मैत्रेयी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

देशवासियों से किया था, तभी से खादी की माँग गाँव-देहात में भी रहती थी। तुलसी जी पर इन सब बातों का गहरा प्रभाव था। यह उनके व्यवहार में भली प्रकार दिखाई भी देता था।

तुलसी जी, गर्मियों में खादी के धोती-कुर्ते का कपड़ा बेचते थे और सर्दियों में कभी-कभी सूत से बने रजाई के लिहाफ माँग के अनुसार ले आते थे। मेरी दादी को वे काकी कहते थे, पास के गाँव के होने से एक रिश्ता उन्होंने बना लिया था। शाम को कपड़े बेचकर जब घर जाते तो अपनी गठरी हमारे घर रख जाते थे, सुबह आकर गठरी ले लेते, कुछ नया कपड़ा लाते तो उसको भी गठरी में रख लेते थे। मेरी दादी से कहते भी, ''काकी नया है। पसंद हो तो आप लेकर बोहनी करा दो।'' उस समय उनका व्यापार विश्वास से चलता था, वरना कौन अपना समान दूसरों के घर पर रखकर जाता है। तुलसी जी सुबह आकर कभी अपनी गठरी के कपड़े गिनते नहीं थे, जैसे रखे रहते वैसे ही उठाकर बेचने निकल जाते थे। धन कमाने की लालसा उनमें रत्ती भर भी नहीं थी। बस जीविका चलती रहे, यही उनका मूल ध्येय था। वो जब गली में कपड़े बेचने जाते तो कभी आवाज नहीं लगाते थे, जिसको जरूरत होती तुलसी जी को आवाज देकर बुला लेता था क्यूँकि सभी घरों के दरवाजे खुले रहते थे। आधुनिक जीवन शैली से लोग तब अनभिज्ञ थे। लोगों का एक-दूसरे पर गहरा विश्वास था।

Illustration by Sonali Kumari

बहुत अधिक मोल-भाव में भी तुलसी जी का विश्वास नहीं था। अगर उन्हें ठीक लगता तो एक आध रुपया ऊपर-नीचे कर लेते, नहीं तो आगे बढ़ जाते। रास्ते में सबको प्रणाम या नमस्ते करते हुए जाते थे। मुझे उनकी एक बात हमेशा प्रभावित करती थी। उस समय चौखट के बाहर दोनों तरफ पत्थर की सिल्ली से बैठने का चबूतरा बनाया जाता था। शाम के समय मैं उस पर बैठ कर खेलती रहती थी। जब तुलसी जी खादी बेचने जाते और शाम को वापस आते तो वे एक काम जरूर करते थे। जिस भी गली में वे जाते तो रास्ते में कोई पत्थर, लकड़ी, काँच या कोई ऐसी वस्तु जो दूसरों के लिए परेशानी का सबब बन सकती है, वे उसे उठाकर ऐसी जगह डाल देते, जहाँ से कोई आता या जाता न हो। उनकी ये आदत मुझे बहुत अच्छी लगती थी। इसीलिए मेरी यादों में वो तस्वीर बसी हुई है।

मैं ये नहीं कहती की आजकल ऐसे लोग नहीं मिलते। होते हैं, पर बहुत कम। जो दूसरों के रास्तों के पत्थर और काँटे साफ करते हैं। वर्तमान समय तो गला-काट प्रतियोगिता का समय है, जहाँ दूसरों से आगे बढ़ने की होड़ में, दूसरों के रास्ते में काँटे बोए जाते हैं और फल की आशा करते हैं। कबीर के शब्दों में-

''बोए पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते होए!''

खादी की माँग अब भी है, लेकिन उतनी नहीं। धीरे-धीरे खादी का स्थान आधुनिक वस्त्रों ने ले लिया। समय के अनुसार लोग खादी के सामान्य कपड़ों की जगह चमक-दमक से प्रभावित होने लगे। तुलसी जी भी वृद्ध हो चले। धीरे-धीरे उनका आना कम हो गया। लोग उन्हें आदर और सम्मान से बुलाते भी थे। पर आधुनिकता की होड़ उन्हें रोक लेती थी। उनके बच्चों ने कुछ और कार्य शुरू कर लिया। क्यूँकि आधुनिक बच्चे वस्त्र बेचने का कार्य तो करेंगे नहीं।

व्यक्ति के भीतर अब आजीविका को कठोर परिश्रम से कमाने की बजाय कम मेहनत में बहुत सा लाभ कमाने की इच्छा दाखिल हो चुकी है। पूंजीवाद के समय में आवश्यकताओं को उपभोग से बदल दिया गया है। दीवाली पर जब तक नए कपड़े और रंगबिरंगी रोशनी का इंतजाम न हो तब तक बाजार की कंपनियां टी.वी.। पर विज्ञापन से शोर मचाती रहती हैं कि आपकी दीवाली इन सब के बिना अधूरी और फीकी है। हम देखते हैं कि जो संतुष्टिभाव तुलसी जी में था वह संतुष्टि भाव आज के बाजार में नहीं हैं। व्यक्ति अब ग्राहक नहीं रह गया है। वह पानी की प्यास कोल्ड्रिंक पीकर मिटा रहा है। कपड़ों को वह तन ढकने का साधन कम पर फैशन से जोड़कर अधिक देखता है। उसे फिक्र है कि अगर बिना मैचिंग के कपड़े पहन लिए तो कहीं मजाक न बन जाए। अब तुलसी जी जैसे व्यक्तित्व खोजने पर भी नहीं मिलते। आज हर चीज को हर कीमत पर समेटता हुआ मानव कवि जय शंकर प्रसाद की पंक्तियों से कुछ सीख सकता है अगर वह सीखना चाहे तब-

"औरों को हंसते देखो मनु, आप हँसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ"

****

Image Clicked by Prasoon Jain